# आमंत्रण

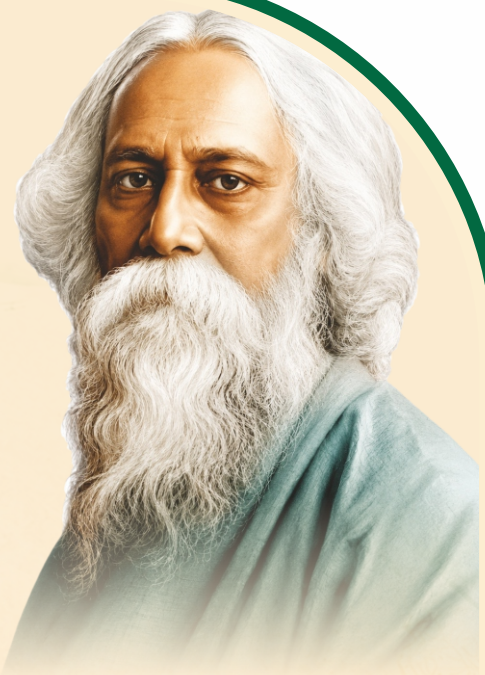

# स्वतंत्रता दिवस

की पूर्व संध्या के पावन अवसर पर

कलाश्रम, नई दिल्ली एवं

राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' स्मृति न्यास, दिल्ली

के संयुक्त तत्वावधान में भारत के राष्ट्रगान 'जन-गण-मन'

के अमर रचयिता नोबेल पुरस्कार विजेता

## कविगुरु रवीन्द्रनाथ टैगोर जी

की स्मृति में आयोजित

# कवि गुरु स्मरण

## दिनांक 14.08.2026 को संध्या 06.00 बजे से

## स्थान : गीतांजलि सभागार, शान्तिनिकेतन, पश्चिम बंगाल

नई दिल्ली एवं कोलकाता से पधारे कथक सम्राट पंडित बिरजू महाराज जी के वरिष्ठ शिष्यगण के द्वारा विभिन्न प्रस्तुतियाँ दी जाएँगी, जो गुरुदेव की कविताओं पर आधारित हैं।

कथक सम्राट पं. बिरजू महाराज जी की वरिष्ठ शिष्या सुश्री शाश्वती सेन जी एवं पुत्री सुश्री ममता महाराज जी के निर्देशन में उनके सांस्कृतिक दल द्वारा प्रस्तुति दी जाएगी।

डॉ. सुमित बसु जी के सांस्कृतिक दल 'मैतेई जागोई', शांति निकेतन की प्रस्तुति के साथ कार्यक्रम का शुभारम्भ किया जाएगा।

संयोजकः

**डॉ. सुभाष चन्द्र राय**
शान्तिनिकेतन, पश्चिम बंगाल

**डॉ. सुमित बसु**
शान्तिनिकेतन, पश्चिम बंगाल

निवेदकः

**सुश्री शाश्वती सेन, सचिव, कलाश्रम, नई दिल्ली**

**नीरज कुमार, अध्यक्ष, राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' स्मृति न्यास, दिल्ली**

प्रधान कार्यालय: 206, द्वितीय तल, विराट भवन कमर्शियल कॉम्प्लेक्स, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
सम्पर्क: 011-47027661, 44788715, मो. 7903357966 Email: dinkarsmriti@yahoo.co.in, Web : https://www.dinkarsmritinyas.org/

निःशुल्क प्रवेश | आप सपरिवार सादर आमंत्रित हैं। | निःशुल्क प्रवेश

# कथक सम्राट पंडित बिरजू महाराज जी के सान्निध्य में कलाश्रम के कलाकारों के द्वारा पूर्व में दी गई प्रस्तुतियों की छवियाँ।

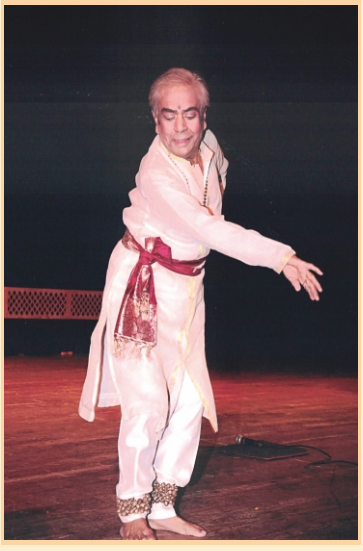

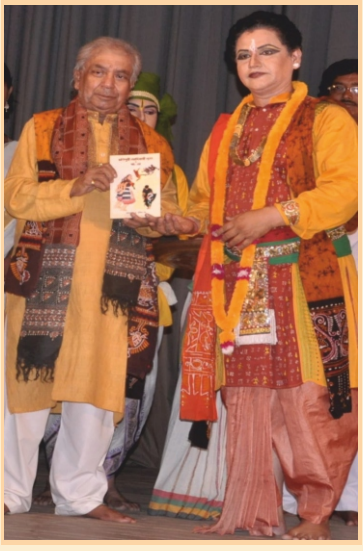

# स्वतंत्रता दिवस

की पूर्व संध्या के पावन अवसर पर

कलाश्रम, नई दिल्ली एवं राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' स्मृति न्यास, दिल्ली

के संयुक्त तत्वावधान में भारत के राष्ट्रगान 'जन-गण-मन' के अमर रचयिता नोबेल पुरस्कार विजेता

कविगुरु रवीन्द्रनाथ टैगोर जी की स्मृति में आयोजित

# कवि गुरु स्मरण

दिनांक 14.08.2026 को संध्या 06.00 बजे से

स्थान : गीतांजलि सभागार, शान्तिनिकेतन, पश्चिम बंगाल

## उद्घाटन सत्र - संध्या 06.00 बजे से

## विशिष्ट अतिथिगण

अध्यक्षता : माननीय श्री अश्विनी कुमार चौबे जी, पूर्व केन्द्रीय राज्यमंत्री, भारत सरकार।

विशिष्ट अतिथि : माननीय श्री जगन्नाथ चट्टोपाध्याय जी, उच्च एवं तकनीकी शिक्षा मंत्री, पश्चिम बंगाल।

विशिष्ट अतिथि : माननीय श्री दूध कुमार मण्डल जी, कृषि मंत्री,पश्चिम बंगाल।

विशिष्ट अतिथि : माननीय श्री कल्याण चक्रबर्ती जी, सूचना प्रौद्योगिकी एवं इलेक्ट्रोनिक्स, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री, पश्चिम बंगाल।

विशिष्ट अतिथि : माननीय श्री उमेश राय जी, संसदीय कार्य, नगर विकास एवं नगर पालिका मामले राज्यमंत्री, पश्चिम बंगाल।

विशिष्ट अतिथि : माननीय श्री शांतनु झा जी, जिला एवं सत्र न्यायाधीश, बीरभूम, पश्चिम बंगाल।

विशिष्ट अतिथि : माननीय प्रो. सुजीत कुमार बसु जी, पूर्व कुलगुरु, विश्वभारती शान्तिनिकेतन, पश्चिम बंगाल।

अतिथि : माननीय श्री अनुप साहा जी, सदस्य, दुबराजपुर विधानसभा, पश्चिम बंगाल।

अतिथि : माननीय श्री ध्रुबा साहा जी, सदस्य, रामपुरहाट विधानसभा, पश्चिम बंगाल।

अतिथि : माननीय श्री उदय शंकर बनर्जी जी, साहित्य सेवी, बीरभूम, पश्चिम बंगाल।

वक्ता : माननीय डॉ. संजय पंकज जी, सुप्रसिद्ध कवि, मुजफ्फरपुर, बिहार।

बीज वक्तव्य : माननीय डॉ. सुभाष चन्द्र राय जी, प्राध्यापक, हिन्दी साहित्य, शान्तिनिकेतन, पश्चिम बंगाल।

संयोजक : माननीय डॉ. सुमित बसु जी, प्राध्यापक, मणिपुरी नृत्य, शान्तिनिकेतन, पश्चिम बंगाल।

स्वागत भाषण : नीरज कुमार, अध्यक्ष, राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' स्मृति न्यास, दिल्ली।

## सांस्कृतिक कार्यक्रम संध्या : 7.00 बजे

नई दिल्ली एवं कोलकाता से पधारे कथक सम्राट पंडित बिरजू महाराज जी के

वरिष्ठ शिष्या सुश्री शाश्वती सेन जी एवं सुपुत्री सुश्री ममता महाराज जी

के निर्देशन में उनके सांस्कृतिक दल द्वारा गुरुदेव की कविताओं पर प्रस्तुतियाँ

## सांस्कृतिक कार्यक्रम संध्या : 8.30 बजे

डॉ. सुमित बसु जी के सांस्कृतिक दल 'मैतेई जागोई', शांति निकेतन की प्रस्तुति

# राष्ट्रकवि रामधारी सिंह ‘दिनकर’ स्मृति न्यास द्वारा पूर्व में आयोजित कार्यक्रमों की छवियाँ

# राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' स्मृति न्यास का परिचय

सांस्कृतिक एवं रचनात्मक समाज के निर्माण के लिए एक संगठन बनने की आवश्यकता प्रतीत हुई। इसी को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' स्मृति न्यास का गठन वर्ष 1990 में एवं पंजीकृत 2006 में किया गया, जो अनवरत समाज में राष्ट्रीयता, समरसता और मानवीयता के लिए कार्य कर रहा है। राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' स्मृति न्यास का मुख्य उद्देश्य सांस्कृतिक भारत का निर्माण करना है ।

सकारात्मक विचारों और गरिमामयी अनुभूतियों से ओत-प्रोत संकल्पों के साथ राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' स्मृति न्यास ने साहित्य एवं समाज के सूर्य राष्ट्रकवि दिनकर के विचारों को जन-जन तक पहुँचाने का बीड़ा उठाया। दिनकर का व्यक्तित्व और कृतित्व जन-चेतना का संवाहक है। देश के शिक्षाविद्, संस्कृतिकर्मी, पत्रकार, कलाकार, राजनेता, किसान, नौजवान, आदि से परामर्श एवं सुझाव लेकर न्यास के गठन की प्रक्रिया को आगे बढ़ाया गया। गणमान्य व्यक्तियों के मार्गदर्शन में 23 सितम्बर, 1990 को (दिनकर जी के 85वीं जन्मदिवस के सुअवसर पर) राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' स्मृति न्यास का विधिवत् गठन हुआ। वास्तव में दिनकर जैसे निष्काम कर्मयोगी, जिनका जीवन मानवता एवं साहित्यिक उन्नयन के लिए समर्पित था, के नाम पर न्यास का नामकरण गौरव की बात है। जनचेतना के उद्घोषक, क्रांतिवीर, राष्ट्रकवि दिनकर आजीवन ज्ञान-साधना में रत रहते हुए अपनी अद्भुत साहित्यिक सृजनशीलता के द्वारा ज्ञान की मशाल जलाकर जनमानस को आलोकित करते रहे।

राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' स्मृति न्यास विगत 35 वर्षों से दिनकर के सपनों को साकार करने तथा सबल, आत्मनिर्भर समृद्ध एवं सांस्कृतिक भारत के निर्माण में अनवरत प्रयासरत है। दलित-शोषित, पीड़ित और वंचित वर्ग की समृद्धि और खुशहाली के लिए न्यास का यह प्रयास है कि इन्हें इनका हक मिल सके और हाशिए पर डाल दिए गए प्रत्येक व्यक्ति को समाज में उसका सही स्थान प्राप्त हो सके। राष्ट्रकवि 'दिनकर' ने कहा है:

**छोड़ो मत अपनी आन, सीस कट जाये,**
**मत झुको अनय पर, भले व्योम फट जाये।**

राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' स्मृति न्यास ने शैशवकाल से लेकर किशोरावस्था तक की यात्र दुर्गम, पथरीले और बीहड़ रास्तों से होकर पूरी की है। इस यात्र में अनेक कार्यक्रम मील का पत्थर साबित हुए हैं, जैसे – हिंदी विकास यात्र, पुस्तक संस्कृति महोत्सव, गीतांजलि महोत्सव, रवीन्द्र सांस्कृतिक महोत्सव, सूर्य महोत्सव, रश्मिरथी महोत्सव, स्वराज्य पर्व, रश्मीराठी पर्व, अटल स्वरांजलि, सद्भावना महोत्सव, भारतीय शिक्षा-संस्कृति महोत्सव, सैकड़ों सेमिनार, यात्रा, संवाद आदि कार्यक्रम भारत के विभिन्न राज्यों में भव्य तरीके से आयोजित किये गये हैं। न्यास सांस्कृतिक एवं समृद्ध भारत के निर्माण के लिए अनवरत कार्य कर रहा है। इस अभियान को देशभर के कलाकार, शिक्षाविद्, अध्यापक, राजनेता, स्वयंसेवी, किसान, नौजवान एवं समाज के सभी तबके के लोगों का रचनात्मक सहयोग एवं सान्निध्य मिल रहा है।


नीरज कुमार, अध्यक्ष,

**राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' स्मृति न्यास, दिल्ली**

प्रधान कार्यालय:206, द्वितीय तल, विराट भवन कमर्शियल कॉम्प्लेक्स, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009

सम्पर्क: 011-47027661, 44788715, मो. 7903357966 Email: dinkarsmriti@yahoo.co.in,

Web : https://www.dinkarsmritinyas.org/

# राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' का परिचय

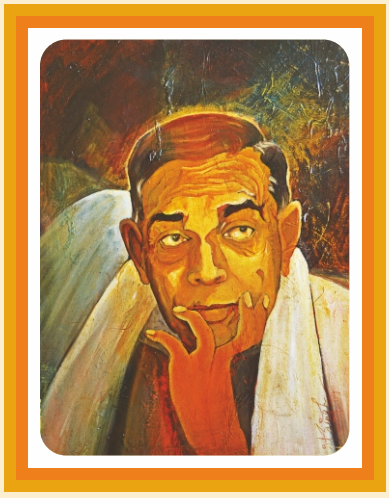

(23-09-1908 - 24-04-1974)

रामधारी सिंह 'दिनकर' का जन्म 23 सितम्बर 1908 ई. को बिहार राज्य के बेगूसराय जिला के सिमरिया ग्राम में हुआ था। उनके पिता जी बाबू रवि सिंह एक साधारण किसान थे एवं माता मनरूप देवी एक कुशल गृहणी। दिनकर दो वर्ष के थे, तब उनके पिता का देहावसान हो गया। दिनकर और उनके भाई-बहनों का पालन पोषण उनकी विधवा माँ करने लगी, जिसमें उनके हितैषी-कुटुम्ब जनों एवं पड़ोसियों का सहयोग भी मिलने लगा। रामधारी सिंह 'दिनकर' प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद पढ़ने के लिए कई किलो मीटर रोज पैदल चलकर विद्यालय जाते थे। मैट्रिक परीक्षा में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने के कारण उन्हें 'भूदेव स्वर्ण पदक' दिया गया। 1932 ई. में पटना कॉलेज से इतिहास में प्रतिष्ठा हासिल की। पारिवारिक बोझ के कारण हाई स्कूल बरबीघा (शेखपुरा) में वर्ष 1933-34 में प्राध्यापक पद स्वीकार किये।

सब रजिस्ट्रार से लेकर जन संपर्क विभाग, बिहार के उप-निदेशक के पद पर उन्होंने कार्य किया। स्नातक की डिग्री होने के बावजूद साहित्य से गहरे लगाव और विषय में दक्षता के कारण सन् 1950 में लंगट सिंह कॉलेज, मुजफ्फरपुर में हिन्दी के प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष पद पर नियुक्ति हुई। 1952 में जब भारत की प्रथम संसद का निर्माण हुआ तो उन्हें राज्य सभा से निर्वाचित किया गया, जो लगभग 12 वर्षों तक रहे। बाद में दिनकर जी सन् 1964-1965 तक भागलपुर विश्वविद्यालय के कुलपति रहे। वर्ष 1965 से 1971 तक भारत सरकार के प्रथम हिन्दी सलाहकार के रूप में बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य किये। राष्ट्रकवि दिनकर ने विभिन्न पदों पर रहते हुए साहित्य सृजन में कोई कमी नहीं की और प्रमुख कृति रेणुका, हुंकार, रसवंती, द्वन्द्वगीत, कुरूक्षेत्र, सामधेनी, रश्मिरथी, उर्वशी, संस्कृति के चार अध्याय एवं अन्य का रचनाओं का सृजन किया।

सन् 1973 ई. में 'उर्वशी' प्रबंध काव्य के लिए उन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार से नवाजा गया। लोग उन्हें गर्जन और हुंकार के कवि के रूप में जानते थे, लेकिन जिस प्रकार प्रकाश के अनेक रंग होते हैं, ठीक उसी प्रकार दिनकर की कविता के भी कई रंग है। दिनकर सात्विक क्रोध, कोमल करुणा और अनुपम सौंदर्य के अद्‌भुत कवि थे। आज भी उनकी कृतियों के अध्ययन, मनन और अनुशीलन से अन्याय एवं शोषण के खिलफ संघर्ष की अद्‌भुत शक्ति मिलती है। दिनकर जी ने अपनी पचास से अधिक ओजस्वी कृतियों के माध्यम से राष्ट्रीयता की भावना को मजबूती प्रदान की और भारत एवं भारतीय संस्कृति को गौरवान्वित किया। हिन्दी भाषा और साहित्य को समृद्ध करने में दिनकर जी का योगदान अप्रतिम है। दिनकर जी 24 अप्रैल, 1974 को बालाजी तिरूपति दर्शन करने गये थे, इसके कुछ घंटे के बाद ही उनका स्वर्गारोहण हो गया।

तेजस्वी सम्मान खोजते नहीं गोत्र बतलाके,
पाते हैं जग से प्रशस्ति अपना करतब दिखलाके।
हीन मूल की ओर देख जग गलत कहे या ठीक,
वीर खींचकर ही रहते हैं इतिहासों में लीक।

– रश्मिरथी

# राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' स्मृति न्यास के सुनहरे पल...

# कविगुरु रवीन्द्रनाथ टैगोर

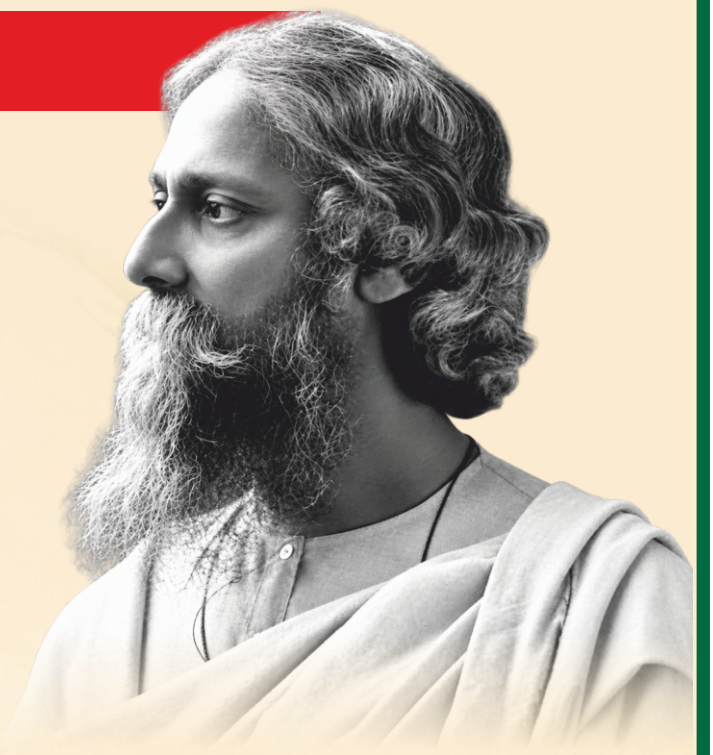

हो चित्त जहाँ भयशून्य, माथ हो उन्नत,
हो ज्ञान जहाँ पर मुक्त, खुला यह जग हो-
घर की दीवारें बने न कोई कारा,
हो जहाँ सत्य ही स्रोत सभी शब्दों का,
हो लगन ठीक से ही सब-कुछ करने की,
हों नहीं रूढ़ियाँ रचती कोई मरुथल-
पाये न सूखने इस विवेक की धारा।
हो सदा विचारों-कर्मों की गति फलती,
बातें हों सारी सोची और विचारी,
हे पिता! मुक्त वह स्वर्ग रचाओ हममें,
बस, उसी स्वर्ग में जागे देश हमारा।

-गीतांजलि

गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर आधुनिक भारत के महानतम साहित्यकारों, दार्शनिकों एवं शिक्षाविदों में से एक थे। उनका जन्म 7 मई 1861 को कलकत्ता ( वर्तमान कोलकाता ) के एक प्रतिष्ठित एवं सांस्कृतिक परिवार में हुआ। उनके पिता महर्षि देवेन्द्रनाथ टैगोर ब्रह्म समाज के प्रमुख नेता और समाज-सुधारक थे। टैगोर बचपन से ही अत्यंत प्रतिभाशाली, संवेदनशील एवं जिज्ञासु प्रवृत्ति के थे। उन्होंने पारंपरिक विद्यालयी शिक्षा कम प्राप्त की, परंतु स्वाध्याय, प्रकृति-चिंतन और पारिवारिक वातावरण से गहन ज्ञान अर्जित किया।

रवीन्द्रनाथ टैगोर ने साहित्य के लगभग सभी रूपों- कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध, पेन्टिंग और संगीत- में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनकी रचनाओं में प्रकृति-प्रेम, मानवीय संवेदना, आध्यात्मिकता और सार्वभौमिक मानवता की भावना का सुंदर समन्वय मिलता है। उनकी प्रसिद्ध काव्य-कृति 'गीतांजलि' के लिए उन्हें वर्ष 1913 में साहित्य का नोबेल पुरस्कार प्राप्त हुआ, जिससे वे यह सम्मान पाने वाले प्रथम एशियाई बने।

टैगोर केवल महान साहित्यकार ही नहीं, बल्कि एक दूरदर्शी शिक्षाविद भी थे। उन्होंने पश्चिम बंगाल के शांति निकेतन में विश्व-भारती विश्वविद्यालय की स्थापना की, जहाँ शिक्षा को प्रकृति, कला और मानवीय मूल्यों के साथ जोड़ा गया। उनका उद्देश्य ऐसी शिक्षा प्रणाली विकसित करना था, जो विद्यार्थियों में स्वतंत्र चिंतन, सृजनात्मकता और मानवीय दृष्टिकोण का विकास करे।

वे एक उत्कृष्ट संगीतकार भी थे और उन्होंने हजारों गीतों की रचना की, जिन्हें 'रवीन्द्र संगीत' के नाम से जाना जाता है। भारत का राष्ट्रगान 'जन गण मन' तथा बांग्लादेश का राष्ट्रगान 'आमार सोनार बांग्ला' उनकी ही अमर कृतियाँ हैं।

रवीन्द्रनाथ टैगोर ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के समय भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वे राष्ट्रप्रेम, स्वाभिमान और मानवता के प्रबल समर्थक थे। 1919 में जलियांवाला बाग हत्याकांड के विरोध में उन्होंने ब्रिटिश सरकार द्वारा प्रदान की गई 'नाइटहुड' की उपाधि लौटा दी, जो उनके उच्च आदर्शों और राष्ट्रीय चेतना का प्रतीक है।

गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर का निधन 7 अगस्त 1941 को कोलकाता में हुआ। उन्होंने लगभग 80 वर्ष का समृद्ध और प्रेरणादायी जीवन व्यतीत किया।